

مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾ لَا تَجْعَلُوا

दे दो और उन के लिये **अल्लाह** से मुआफी मांगो<sup>153</sup> बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है रसूल के

دُعَاءِ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۖ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ

पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है<sup>154</sup> बेशक **अल्लाह** जानता है जो

يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرٍ أَنْ

तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ ले कर<sup>155</sup> तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के खिलाफ़ करते हैं कि

تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ

उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे<sup>156</sup> या उन पर दर्दनाक अज़ाब पड़े<sup>157</sup> सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों

وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ

और ज़मीन में है बेशक वोह जानता है जिस हाल पर तुम हो<sup>158</sup> और उस दिन को जिस में उस की तरफ़ फेरे जाएंगे<sup>159</sup>

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने ने किया और **अल्लाह** सब कुछ जानता है<sup>160</sup>

﴿آياتها ٢٢﴾ ﴿سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ٢٢﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٦﴾

सूरए फुरक़ान मक्किय्या है, इस में सतत्तर आयतें और छ<sup>6</sup> रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

जंग और जुमुआ व इदैन और मशवरा और हर इज्तिमाअ जो **अल्लाह** के लिये हो। 152 : उन का इजाज़त चाहना निशाने फ़रमां बरदारी और दलीले सिद्दहते ईमान है। 153 : इस से मा'लूम हुवा कि अफ़ज़ल येही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त त़लब न करें। **मस्अला** : इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिये। (मारक) 154 : क्यूं कि जिस को रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पुकारें उस पर इजाबत व ता'मील वाजिब हो जाती है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब हाज़िर होने के लिये इजाज़त त़लब करे और इजाज़त से ही वापस हो। और एक मा'ना मुफ़स्सरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को निदा करे तो अदबो तक़ीम और तौक़ीरो ता'ज़ीम के साथ, आप के मुअज़्ज़म अल्काब से, नर्म आवाज़ के साथ, मुतवाज़िआना व मुन्कसिराना लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह" कह कर। 155 : शाने नुज़ूल : मुनाफ़िकीन पर रोज़े जुमुआ मस्जिद में ठहर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के ख़ुत्बे का सुनना गिरां होता था तो वोह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ ले कर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 156 : दुन्या में तकलीफ़ या क़ल्ल या ज़ल्ज़ले या और होलनाक हवादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का सख़्त हो कर मा'रिफ़ते इलाही से महरूम रहना। 157 : आख़िरत में। 158 : ईमान पर या निफ़ाक़ पर। 159 : जजा के लिये, और वोह दिन रोज़े क़ियामत है। 160 : उस से कुछ छुपा नहीं। 1 : सूरए फुरक़ान मक्किय्या है, इस में छ<sup>6</sup> रूकूअ और सतत्तर आयतें और आठ सो बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सो तीन हर्फ़ हैं।

تَبْرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ١

बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा कुरआन अपने बन्दे पर<sup>2</sup> जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो<sup>3</sup>

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَوَلَمْ يَكُنْ

वोह जिस के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत और उस ने न इख्तियार फ़रमाया बच्चा<sup>4</sup> और उस की

لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدْ رَأَاهُ تَقْدِيرًا ٢

सलतनत में कोई साझी (शरीक) नहीं<sup>5</sup> उस ने हर चीज़ पैदा कर के ठीक अन्दाज़े पर रखी

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا

और लोगों ने उस के सिवा और खुदा ठहरा लिये<sup>6</sup> कि वोह कुछ नहीं बनाते और खुद पैदा किये गए हैं और

يَبْلُغُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَبْلُغُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً

खुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख्तियार न जीने का

وَلَا نُشُورًا ٣ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا افْتِرَاءُ

न उठने का और काफ़िर बोले<sup>7</sup> येह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने ने बना लिया है<sup>8</sup>

وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ٤ وَقَالُوا

और इस पर और लोगों ने<sup>9</sup> उन्हें मदद दी है बेशक वोह<sup>10</sup> जुल्म और झूट पर आए और बोले<sup>11</sup>

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبْنَا فَهِيَ تَأْتِي عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ٥ قُلْ

अगलों की कहानियां हैं जो उन्होंने ने<sup>12</sup> लिख ली हैं तो वोह उन पर सुब्हो शाम पढ़ी जाती हैं तुम फ़रमाओ

2 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर । 3 : इस में हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के उमूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए जिन हों या बशर या फ़िरिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आप के उम्मतों हैं क्यूं कि "आलम" मा सिवा **اَللّٰهُ** को कहते हैं इस में येह सब दाख़िल हैं, मलाएका को इस से ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कबीर में इमामे राजी से और शुअबुल ईमान में बैहकी से सादिर हुवा बे दलील है और दा'वए इज्माअ ग़ैर साबित, चुनान्चे इमाम सुबकी व बाज़िरी व इब्ने हज़म व सुयूती ने इस का तभाकुब किया और खुद इमामे राजी को तस्लीम है कि आलम मा सिवा **اَللّٰهُ** को कहते हैं, पस वोह तमाम ख़ल्क को शामिल है मलाएका को इस से ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं, इलावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : **أُرْسِلْتُ إِلَى الْخَلْقِ كَأَفَّةٍ** या'नी मैं तमाम ख़ल्क की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया । अल्लामा अज़ी क़ारी ने मिर्क़ात में इस की शर्ह में फ़रमाया : या'नी तमाम मौजूदात की तरफ़ जिन हों या इन्सान या फ़िरिश्ते या हैवानात या जमादात । इस मसअले की कामिल तन्कीह व तहक़ीक़ शर्ह व बस्त के साथ इमामे कस्तलानी की मवाहिबे लदुनिय्या में है । 4 : इस में यहूदो नसारा का रद है जो हज़रते उज़ैर व मसीह **عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को खुदा का बेटा कहते हैं । 5 : **مَعَادًا** इस में बुत परस्तों का रद है जो बुतों को खुदा का शरीक ठहराते हैं । 6 : या'नी बुत परस्तों ने बुतों को खुदा ठहराया जो ऐसे आजिज़ व बे कुदरत हैं । 7 : या'नी नज़्र बिन हारिस और इस के साथी कुरआने करीम की निस्बत कि 8 : या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने । 9 : और लोगों से नज़्र बिन हारिस की मुराद यहूदी थे और अद्दास व यसार वग़ैरा अहले किताब । 10 : नज़्र बिन हारिस वग़ैरा मुशिरकीन जो येह बेहूदा बात कहने वाले थे । 11 : वोही मुशिरकीन कुरआने करीम की

أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا

उसे तो उस ने उतारा है जो आस्मानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है<sup>13</sup> बेशक वोह बख़्शने वाला

رَّحِيمًا ٦ وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَسْتَبِي فِي

मेहरबान है<sup>14</sup> और बोले<sup>15</sup> इस रसूल को क्या हुवा खाना खाता है और बाज़ारों में

الْأَسْوَاقِ ٧ لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ٨ أَوْ يُلْقَى

चलता है<sup>16</sup> क्यूं न उतारा गया इन के साथ कोई फ़िरिश्ता कि इन के साथ डर सुनाता<sup>17</sup> या ग़ैब से

إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ٩ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ

इन्हें कोई खज़ाना मिल जाता या इन का कोई बाग़ होता जिस में से खाते<sup>18</sup> और ज़ालिम बोले<sup>19</sup> तुम

تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ١٠ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ

तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुवा<sup>20</sup> ऐ महबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं

فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ١١ تَبْرَكَ الَّذِي لِيَنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ

तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते बड़ी बरकत वाला है वोह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये

خَيْرًا مِّنْ ذَلِكَ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلُ لَكَ

बहुत बेहतर इस से कर दे<sup>21</sup> जन्नतें जिन के नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे

قُصُورًا ١٢ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ١٣ وَأَعْتَدْنَا لِلنَّاسِ كَذَّبًا بِالسَّاعَةِ

महल बल्कि यह तो क़ियामत को झुटलाते हैं और जो क़ियामत को झुटलाए हम ने उस के लिये तय्यार कर रखी है भड़क्ती हुई

سَعِيرًا ١٤ إِذَا رَأَوْهُم مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا هَاتِغِيظًا وَزَفِيرًا ١٥

आग जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी<sup>22</sup> तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना

निस्बत कि यह रुस्तम व इस्फ़न्दयार वगैरा के किस्सों की तरह 12 : या'नी सय्यिदे अ़लाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने । 13 : या'नी कुरआने करीम उलूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है । यह दलीले सरीह है इस की, कि वोह हज़रते अल्लामुल गुयूब की तरफ़ से है । 14 : इसी लिये कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता । 15 : कुफ़्फ़ारे कुरैश 16 : इस से उन की मुराद यह थी कि आप नबी होते तो न खाते, न बाज़ारों में चलते और ये भी न होता तो 17 : और इन की तस्दीक़ करता और इन की नुबुव्वत की शहादत देता । 18 : मालदारों की तरह । 19 : मुसलमानों से 20 : और مَعَادِلُ اللهُ उस की अक़ल बजा न रही । ऐसी तरह तरह की बेहूदा बातें उन्हों ने बर्की । 21 : या'नी जल्द आप को इस खज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़ता फ़रमावे जो येह काफ़िर कहते हैं । 22 : एक बरस की राह से या सो बरस की राह से, दोनों क़ौल हैं और आग का देखना कुछ बर्द नहीं **अबला** तआला चाहे तो इस को हयात व अक़ल और रूयत अ़ता फ़रमाए । और बा'ज मुफ़स्सिरिन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है ।

وَإِذَا الْقُؤُومِنَهَا مَكَانًا ضِيقًا مَقْرَنِينَ دَعَا هُنَالِكَ ثُبُورًا ١٣

और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाये<sup>23</sup> जन्जीरों में जकड़े हुए<sup>24</sup> तो वहां मौत मांगेंगे<sup>25</sup>

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ١٤ قُلْ أَدْرِكُ

फरमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो<sup>26</sup> तुम फ़रमाओ क्या येह<sup>27</sup>

خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ١٥ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً

भला या वोह हमेशगी के बाग़ जिस का वा'दा डर वालों को है वोह उन का सिला

وَمَصِيرًا ١٥ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خُلْدٍ إِنَّ كَانِ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا

और अन्जाम है उन के लिये वहां मन मानी मुरादें हैं जिन में हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वा'दा है

مَسْئُولًا ١٦ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ

मांगा हुवा<sup>28</sup> और जिस दिन इकठ्ठा करेगा उन्हें<sup>29</sup> और जिन को **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं<sup>30</sup> फिर उन मा'बूदों से फ़रमाएगा

ءَأَنْتُمْ أَضَلُّتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ١٧ قَالُوا

क्या तुम ने गुमराह कर दिये येह मेरे बन्दे या येह खुद ही राह भूले<sup>31</sup> वोह अर्ज करेंगे

سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يُنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَ

पाकी है तुझ को<sup>32</sup> हमें सज़ावार (हक़) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाए<sup>33</sup>

لَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ حَتَّىٰ سَأَلُوا الدِّكَرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ١٨

लेकिन तू ने उन्हें और उन के बाप दादाओं को बरतने दिया<sup>34</sup> यहां तक कि वोह तेरी याद भूल गए और येह लोग थे ही हलाक होने वाले<sup>35</sup>

23 : जो निहायत कर्ब व बेचैनी पैदा करने वाली हो । 24 : इस तरह कि उन के हाथ गरदनों से मिला कर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ जन्जीरों में जकड़ा हुआ हो । 25 : और "وَالثُّبُورَاهُ وَالثُّبُورَاهُ" का शोर मचाएंगे ब ई मा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा । हदीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और इस की जुर्रियत इस के पीछे होगी और येह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से 26 : क्यूं कि तुम तरह तरह के अज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे । 27 : अज़ाब और अहवाले जहन्नम जिस का ज़िक्र किया गया । 28 : या'नी मांगने के लाइक़ या वोह जो मोमिनीन ने दुन्या में येह अर्ज कर के मांगा : "رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ" या येह अर्ज कर के "رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ" 29 : या'नी मुशिरकीन को 30 : या'नी उन के बातिल मा'बूदों को ख़्वाह ज़विल उकूल हों या ग़ैर ज़विल उकूल । कल्बी ने कहा कि उन मा'बूदों से बुत मुराद हैं, उन्हें **अल्लाह** तआला गोयाई देगा । 31 : **अल्लाह** तआला हकीकते हाल का जानने वाला है उस से कुछ भी मख़फ़ी नहीं । येह सुवाल मुशिरकीन को ज़लील करने के लिये है कि इन के मा'बूद इन्हें झुटलाएं तो इन की हसरत व ज़िल्लत और ज़ियादा हो । 32 : इस से कि कोई तेरा शरीक हो । 33 : तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मा'बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे, हम तेरे बन्दे हैं । 34 : और उन्हें अम्वाल व औलाद व तूले उम्र व सिद्दहत व सलामत इनायत की 35 : शकी, बा'दे अर्जी कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा ।

فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۗ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرَافًا وَلَا نَصْرًا ۗ وَمَنْ

तो अब मा'बूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में

يُظْلِمُ مِنْكُمْ نُذِقُهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝١٩ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ

जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे और हम ने तुम से पहले जितने

الرُّسُلِينَ إِلَّا أَنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَشْرَبُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَ

रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते<sup>36</sup> और

جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝٢٠

हम ने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है<sup>37</sup> और ऐ लोगो क्या तुम सब करोगे<sup>38</sup> और ऐ महबूब तुम्हारा रब देखता है<sup>39</sup>

**36 :** यह कुफ़ार के उस ता'न का जवाब है जो उन्होंने ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर किया था कि वोह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं, यहां बताया गया कि यह उमूर मुनाफ़िये नुबुव्वत नहीं बल्कि यह तमाम अम्बिया की आदते मुस्तमिरह थी, लिहाज़ा यह ता'न महज़ जहल व इनाद है। **37** शाने नुज़ूल : शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो गुरबा को देख कर येह ख़याल करते कि येह हम से पहले इस्लाम ला चुके इन को हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी, ब ई ख़याल वोह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिये गुरबा आज़्माइश बन जाते। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू जहल व वलीद बिन उक्बा और आस बिन वाइल सहमी और नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई, इन लोगों ने हज़रते अबू ज़र व इब्ने मस्रूद व अम्मार इब्ने यासिर व बिलाल व सुहैब व आमिर बिन फुहैरा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो गुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएंगे तो इन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और इन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा। और एक क़ौल येह है कि येह आयत फ़ुकराए मुस्लिमीन की आज़्माइश में नाज़िल हुई जिन का कुफ़ारे कुरैश इस्तिहज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का इत्तिबाअ करने वाले येह लोग हैं जो हमारे गुलाम और अरज़ल (ज़लील व हक़ीर) हैं। **अव्बाह** तआला ने येह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (طَارُونَ) **38 :** इस फ़क़रो शिद्दत पर और कुफ़ार की इस बदगोई पर। **39 :** उस को जो सब करे और उस को जो बे सबी करे।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُولَٰئِكَ لَا يُؤْمِنُونَ

और बोले वोह लोग जो<sup>40</sup> हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फिरिश्ते क्यूं न उतारे<sup>41</sup> या हम अपने रब को

رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْعُوا كَبِيرًا ٢١

देखते<sup>42</sup> बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी पर आए<sup>43</sup> जिस दिन फिरिश्तों को

الْبَلَاءِ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْجُرْمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا ٢٢

देखेंगे<sup>44</sup> वोह दिन मुजरिमों की कोई खुशी का न होगा<sup>45</sup> और कहेंगे इलाही हम में उन में कोई आड़ कर दे रकी हुई<sup>46</sup>

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِن عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا ٢٣

और जो कुछ उन्होंने ने काम किये थे<sup>47</sup> हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं<sup>48</sup> जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ٢٤

वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना<sup>49</sup> और हिसाब के दोपहर के बा'द अच्छी आराम की जगह और जिस दिन फट जाएगा आस्मान

بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ٢٥

बादलों से और फिरिश्ते उतारे जाएंगे पूरी तरह<sup>50</sup> उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है

وَكَانَ يَوْمَئِذٍ عَلَى الْكٰفِرِينَ عَسِيرًا ٢٦

और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त है<sup>51</sup> और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा<sup>52</sup>

40 : काफ़िर हैं, हशर व बअूस के मो'तक़िद नहीं, इसी लिये 41 : हमारे लिये रसूल बना कर या सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की नुबुव्वत व रिसालत के गवाह बना कर 42 : वोह खुद हमें ख़बर दे देता कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उस के रसूल हैं। 43 : और उन का तकब्बुर इन्तिहा को पहुंच गया और सरकशी हृद से गुज़र गई कि मो'जिज़ात का मुशाहदा करने के बा'द मलाएका के अपने ऊपर उतरने और al-ccus तआला को देखने का सुवाल किया। 44 : या'नी मौत के दिन या क़ियामत के दिन 45 : रोज़े क़ियामत फिरिश्ते मोमिनीन को बिशारत सुनाएंगे और कुफ़फ़ार से कहेंगे तुम्हारे लिये कोई खुश ख़बरी नहीं। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फिरिश्ते कहेंगे कि मोमिन के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना हलाल नहीं, इस लिये वोह दिन कुफ़फ़ार के वासिते निहायत हस्तो अन्दोह और रन्जो ग़म का दिन होगा। 46 : इस कलामे से वोह मलाएका से पनाह चाहेंगे 47 : हालते कुफ़ में मिस्तल सिलए रेहमी व मेहमान दारी व यतीम नवाजी वगैरा के 48 : न हाथ से छूए जाएं न उन का साया हो, मुराद येह है कि वोह आ'माल बातिल कर दिये गए उन का कुछ समरा और कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि आ'माल की मक्बूलियत के लिये ईमान शर्त है और वोह उन्हें मुयस्सर न था, इस के बा'द अहले जन्नत की फज़ीलत इशार्द होती है। 49 : और उन की क़रार गाह उन मग़रूर मुतकब्बिर मुशिरकों से बुलन्दो वाला बेहतर व आ'ला 50 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : आस्माने दुन्या फटेगा और वहां के रहने वाले (फ़िरिश्ते) उतरेंगे और वोह तमाम अहले ज़मीन से ज़ियादा हैं जिन्को इन्स सब से। फिर दूसरा आस्मान फटेगा वहां के रहने वाले उतरेंगे वोह आस्माने दुन्या के रहने वालों से और जिन्को इन्स सब से ज़ियादा हैं। इसी तरह आस्मान फटते जाएंगे और हर आस्मान वालों की ता'दाद अपने मा तहतों से ज़ियादा है यहां तक कि सातवां आस्मान फटेगा फिर करूबी उतरेंगे फिर हामिलीने अ़श्र और येह रोज़े क़ियामत होगा। 51 : और al-ccus के फज़ल से मुसल्मानों पर सहल। हदीस शरीफ में है कि क़ियामत का दिन मुसल्मानों पर आसान किया जाएगा यहां तक कि वोह उन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हलका होगा जो दुन्या में पढ़ी थी। 52 : हस्तो नदामत से। येह हाल अगर्चे कुफ़फ़ार के लिये आ़म है मगर उ़क्बा बिन अबी मुएत् से इस का ख़ास तअल्लुक है। शाने नुज़ूल : उ़क्बा बिन अबी मुएत् उबय बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्ता था, हज़ूर

يَقُولُ يَلِيَّتِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾ يُوَيْلَتِي لِيَّتِي لَمْ

कि हाए किसी तरह से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती<sup>53</sup> वाए खुराबी मेरी हाए किसी तरह मैं ने

اتَّخَذُ فَلَا نَخِيلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَ

फुलाने को दोस्त न बनाया होता बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से<sup>54</sup> और

كَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي

शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है<sup>55</sup> और रसूल ने अर्ज की कि ऐ मेरे रब मेरी कौम ने

اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّن

इस कुरआन को छोड़ने के काबिल ठहरा लिया<sup>56</sup> और इसी तरह हम ने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे

الْمُجْرِمِينَ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًّا وَنَصِيرًا ﴿٣١﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا

मुजरिम लोग<sup>57</sup> और तुम्हारा रब काफी है हिदायत करने और मदद देने को और काफिर बोले

لَوْلَا نَزَّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۗ كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ

कुरआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया<sup>58</sup> हम ने यूंही ब तदरीज उसे उतारा है कि उस से तुम्हारा दिल

فُؤَادَكَ وَرَتَّبْنَاهُ تَرْتِيبًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَ

मजबूत करें<sup>59</sup> और हम ने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा<sup>60</sup> और वोह कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे<sup>61</sup> मगर हम हक और

सखिये आलम के फरमाने से उस ने "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ" की शहादत दी और इस के बा'द उबय बिन खलफ़ के जोर डालने से फिर मुरतद हो गया और सखिये आलम के फरमाने से उस को मक्तूल होने की खबर दी। चुनान्चे बद्र में मारा गया येह आयत उस के हक में नाज़िल हुई कि रोज़े कियामत उस को इन्तिहा दरजे की हस्रतो नदामत होगी, इस हस्रत में वोह अपने हाथ चाब चाब लेगा। 53 : जन्नत व नजात की और उन का इत्तिबाअ किया होता और उन की हिदायत कबूल की होती 54 : या'नी कुरआन व ईमान से 55 : और बला व अज़ाब नाज़िल होने के वक़्त उस से अलाहदगी करता है। हज़रते अबू हु'रैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अबू दावूद व तिरमिज़ी में एक हदीस मरवी है कि सखिये आलम के फरमाने से फरमाया : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है और हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सखिये आलम के फरमाने से फरमाया : हम नशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़ गार को। मस्अला : बे दीन और बद मजहब की दोस्ती और उस के साथ सोहबत व इख़िलात् और उल्फत व एहतिराम मन्मूअ है। 56 : किसी ने इस को सेहूर कहा, किसी ने शे'र और वोह लोग ईमान लाने से महरूम रहे, इस पर **اللَّهُ** तआला ने हुजूर को तसल्ली दी और आप से मदद का वा'दा फरमाया जैसा कि आगे इर्शाद होता है। 57 : या'नी अम्बिया के साथ बद नसीबों का येही मा'मूल रहा है। 58 : जैसे कि तौरैत व इन्जील व ज़बूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी। कुफ़्फ़ार का येह ए'तिराज़ बिल्कुल फुज़ूल और मोहमल है क्यूं कि कुरआने करीम का मो'जिज़ा व मुद्दतज बिही होना हर हाल में यक्सां है, चाहे यक्बारागी नाज़िल हो या ब तदरीज बल्कि ब तदरीज नाज़िल फरमाने में इस के ए'जाज़ का और भी कामिल इज़हार है कि जब एक आयत नाज़िल हुई और तहदी की गई और खल्क का इस के मिसल बनाने से आजिज़ होना जाहिर हुवा फिर दूसरी उतरी इसी तरह इस का ए'जाज़ जाहिर हुवा, इस तरह बराबर आयत आयत हो कर कुरआने पाक नाज़िल होता रहा और हर हर दम इस की बे मिसाली और खल्क की आजिज़ी जाहिर होती रही। गरज़ कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ महज़ लगव व बे मा'ना है, आयत में **اللَّهُ** तआला ब तदरीज नाज़िल फरमाने की हिक्मत जाहिर फरमाता है। 59 : और पयाम का सिल्सिला जारी रहने से आप के कल्बे मुबारक को तस्कीन होती रहे और कुफ़्फ़ार को हर हर मौक़अ पर जवाब मिलते रहें। इलावा बरीं येह भी फ़ाएदा है कि उस का हिफ़ज़ सहल और आसान हो। 60 : ब ज़बाने जिब्रील थोड़ा

أَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۳۳) الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ لَا

इस से बेहतर बयान ले आएंगे वोह जो जहन्म की तरफ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल

أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۳۴) وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَ

उन का ठिकाना सब से बुरा<sup>62</sup> और वोह सब से गुमराह और बेशक हम ने मूसा को किताब अता फरमाई और

جَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۳۵) فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ

इस के भाई हारून को वज़ीर किया तो हम ने फरमाया तुम दोनों जाओ उस कौम की तरफ जिस ने

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۳۶) وَقَوْمٌ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

हमारी आयतें झुटलाई<sup>63</sup> फिर हम ने उन्हें तबाह कर के हलाक कर दिया और नूह की कौम को<sup>64</sup> जब उन्होंने ने रसूलों को

الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۳۷) وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا

झुटलाया<sup>65</sup> हम ने उन को डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया<sup>66</sup> और हम ने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब तय्यार

الْيَسَاءَ ۳۸) وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۳۹)

कर रखा है और आद और समूद<sup>67</sup> और कूएं वालों को<sup>68</sup> और इन के बीच में बहुत सी संगतें<sup>69</sup>

وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ الْأَمْثَالَ ۴۰) وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ

और हम ने सब से मिसालें बयान फरमाई<sup>70</sup> और सब को तबाह कर के मिटा दिया और ज़रूर येह<sup>71</sup> हो आए हैं उस

थोड़ा बीस या तेईस बरस की मुद्दत में, या येह मा'ना हैं कि हम ने आयत के बा'द आयत ब तदरीज नाज़िल फरमाई। और बा'ज ने कहा कि **अल्लाह** तआला ने हमें किराअत में तरतील करने या'नी ठहर ठहर कर ब इत्मीनान पढ़ने और कुरआन शरीफ को अच्छी तरह अदा करने का हुकम फरमाया जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा "وَرَتَّلِ الْقُرْآنَ مُرْتَلًا" 61 : या'नी मुशरकीन आप के दीन के खिलाफ या आप की नुबुव्वत में कदह (ऐबज़ई) करने वाला कोई सुवाल पेश न कर सकेगे। 62 : हदीस शरीफ में हे कि आदमी रोजे क्रियामत तीन तरीके पर उठाए जाएंगे : एक गुरौह सुवारियों पर, एक गुरौह पियादा पा और एक जमाअत मुंह के बल घिसटती। अर्जु किया गया : या रसूलल्लाह **अल्लाह** तआला ने वोह मुंह के बल कैसे चलेंगे ? फरमाया : जिस ने पाउं पर चलाया है वोही मुंह के बल चलाएगा। 63 : या'नी कौमे फिरऔन की तरफ। चुनान्चे वोह दोनों हज़रात उन की तरफ गए और उन्हें खुदा का खौफ दिलाया और अपनी रिसालत की तबलीग की, लेकिन उन बद बख्तों ने उन हज़रात को झुटलाया। 64 : भी हलाक कर दिया। 65 : या'नी हज़रते नूह और हज़रते इदरीस को और हज़रते शीस को या येह बात है कि एक रसूल की तकज़ीब तमाम रसूलों की तकज़ीब है तो जब उन्होंने ने हज़रते नूह को झुटलाया तो सब रसूलों को झुटलाया। 66 : कि बा'द वालों के लिये इब्रत हों। 67 : और आद हज़रते हूद **अल्लाह** की कौम और समूद हज़रते सालेह **अल्लाह** की कौम, इन दोनों कौमों को भी हलाक किया। 68 : येह हज़रते शुऐब **अल्लाह** की कौम थी जो बुत परस्ती करते थे। **अल्लाह** तआला ने उन की तरफ हज़रते शुऐब **अल्लाह** को भेजा। आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी, उन्होंने ने सरकशी की, हज़रते शुऐब **अल्लाह** की तकज़ीब की और आप को ईज़ा दी। उन लोगों के मकान कूएं के गिर्द थे। **अल्लाह** तआला ने उन्हें हलाक किया और येह तमाम कौम मअ अपने मकानों के उस कूएं के साथ ज़मीन में धंस गई। इस के इलावा और अक्वाल भी हैं। 69 : या'नी कौमे आद व समूद और कूएं वालों के दरमियान में बहुत सी उम्मतें हैं जिन को अम्बिया की तकज़ीब करने के सबब से **अल्लाह** तआला ने हलाक किया। 70 : और हुज्जतें काइम कीं और उन में से किसी को बिगैर इन्ज़ार हलाक न किया। 71 : या'नी कुफ़रों मक्का अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार।



الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمِطِرَتْ مَطَرِ السَّوَاءِ ۖ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ كَانُوا

बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था<sup>72</sup> तो क्या यह उसे देखते न थे<sup>73</sup> बल्कि उन्हें जी

لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۗ وَإِذَا رَأَوْكَ أَنْ يَنْتَحِدُونَ كَالْأَهْرُؤِ ۗ أَهَذَا

उठने की उम्मीद थी ही नहीं<sup>74</sup> और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठग्रा (मजाक)<sup>75</sup> क्या यह हैं

الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۗ إِنَّ كَادَ لِيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْتِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا

जिन को **ALLAH** ने रसूल बना कर भेजा करीब था कि यह हमें हमारे खुदाओं से बहका दें अगर हम इन पर सब्र न

عَلَيْهَا ۗ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرُونَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۗ

करते<sup>76</sup> और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अज़ाब देखेंगे<sup>77</sup> कि कौन गुमराह था<sup>78</sup>

أَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۗ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكَيْلًا ۗ أَمْ

क्या तुम ने उसे देखा जिस ने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना खुदा बना लिया<sup>79</sup> तो क्या तुम उस की निगहबानी का ज़िम्मा लोगे<sup>80</sup> या

تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۗ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ

येह समझते हो कि उन में बहुत कुछ सुनते या समझते हैं<sup>81</sup> वोह तो नहीं मगर जैसे चौपाए

بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۗ أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۗ وَلَوْ شَاءَ

बल्कि उन से भी बदतर गुमराह<sup>82</sup> ऐ महबूब क्या तुम ने अपने रब को न देखे<sup>83</sup> कि कैसा फैलाया साया<sup>84</sup> और अगर चाहता

72 : उस बस्ती से मुराद सदूम है जो कौमे लूत की पांच बस्तियों में सब से बड़ी बस्ती थी, उन बस्तियों में एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो उस ख़बीस बदकारी के आंमिल न थे जिस में बाकी चार बस्तियों के लोग मुब्तला थे। इसी लिये उन्होंने नजात पाई और वोह चार बस्तियां अपनी बद अमली के बाइस आस्मान से पथ्थर बरसा कर हलाक कर दी गई। 73 : कि इब्रत पकड़ते और ईमान लाते। 74 : या'नी मरने के बा'द जिन्दा किये जाने के काइल न थे कि उन्हें आखिरत के सवाब व अज़ाब की परवाह होती। 75 : और कहते हैं : 76 : इस से मा'लूम हुवा कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की दा'वत और आप के इज़हारे मो'जिजात ने कुफ़्फ़ार पर इतना असर किया था और दीने हक़ को इस कदर वाजेह कर दिया था कि खुद कुफ़्फ़ार को इक्फ़ार है कि अगर वोह अपनी हट पर जमे न रहते तो करीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और दीने इस्लाम इख़्तियार करें या'नी दीने इस्लाम की हक्कानिय्यत उन पर ख़ूब वाजेह हो चुकी थी और शुक्को शुबुहात मिटा डाले गए थे लेकिन वोह अपनी हट और जिद की वज्ह से महरूम रहे। 77 : आखिरत में 78 : येह उस का जवाब है कि कुफ़्फ़ार ने येह कहा था कि करीब है कि येह हमें हमारे खुदाओं से बहका दें, यहां बताया गया कि बहके हुए तुम खुद हो और आखिरत में येह तुम को खुद मा'लूम हो जाएगा और रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़ बहकाने की निस्वत महज़ूब जे जा है। 79 : और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजने लगा, उसी का मुतीअ हो गया, वोह हिदायत किस तरह क़बूल करेगा। मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग एक पथ्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पथ्थर उस से अच्छा नज़र आता तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते। 80 : कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो 81 : या'नी वोह अपने शिद्दे इनाद से न आप की बात सुनते हैं न दलाइल व बराहीन को समझते हैं, बहरे और ना समझ बने हुए हैं। 82 : क्यूं कि चौपाए भी अपने रब की तस्बीह करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उस के मुतीअ रहते हैं और एहसान करने वाले को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नाफ़ेअ की तलब करते हैं, मुज़िर से बचते हैं, चरागाहों की राहें जानते हैं, येह कुफ़्फ़ार उन से भी बदतर हैं कि न रब की इताअत करते हैं न उस के एहसान को पहचानते हैं न शैतान जैसे दुश्मन की ज़रर रसाने को समझते हैं न सवाब जैसी अज़ीमुल मन्फ़अत चीज़ के तालिब हैं न अज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मोहलिका से बचते हैं। 83 : कि उस की सन्अत व कुदरत कैसी अज़ीब है। 84 : सुब्हे सादिक़ के तुलूअ

لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ٣٥ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا

तो उसे ठहराया हुआ कर देता<sup>85</sup> फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी

قَبْضًا يَسِيرًا ٣٦ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَ

तरफ समेटा<sup>86</sup> और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और

جَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ٣٧ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا ابْنِ يَدَايِ

दिन बनाया उठने के लिये<sup>87</sup> और वोही है जिस ने हवाएं भेजी अपनी रहमत के आगे

رَاحَتِهِ ٣٨ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ٣٩ لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَيِّتًا وَ

मुज्दा सुनाती हुई<sup>88</sup> और हम ने आस्मान से पानी उतारा पाक करने वाला ताकि हम उस से जिन्दा करें किसी मुर्दा शहर को<sup>89</sup> और

نُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنْ آسَى كَثِيرًا ٤٠ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيهِمْ

उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को और बेशक हम ने उन में पानी के फेरे

لِيذَكَّرُوا ٤١ فَآبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ٤٢ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ

रखे<sup>90</sup> कि वोह ध्यान करें<sup>91</sup> तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुकी करना और हम चाहते तो हर बस्ती में

قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ٤٣ فَلَا تُطِيعُ الْكُفْرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ٤٤

एक डर सुनाने वाला भेजते<sup>92</sup> तो काफिरों का कहा न मान और इस कुरआन से उन पर जिहाद कर बड़ा जिहाद

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَ

और वोही है जिस ने मिले हुए रवां किये दो समुन्दर येह मीठा है निहायत शीरीं और येह खारी है निहायत तल्ख और

جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَحْجُورًا ٤٥ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ

उन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़<sup>93</sup> और वोही है जिस ने पानी से<sup>94</sup> बनाया

के बा'द से आप्ताब के तुलुअ तक कि उस वक्त तमाम ज़मीन में साया ही साया होता है न धूप है न अंधेरा है । 85 : कि आप्ताब के तुलुअ से भी जाइल न होता । 86 : कि तुलुअ के बा'द आप्ताब जितना ऊंचा होता गया साया सिमटता गया । 87 : कि इस में रोजी तलाश करो और कामों में मशगूल हो । हज़रते लुक्मान ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बा'द फिर उठोगे । 88 : यहां रहमत से मुराद बारिश है 89 : जहां की ज़मीन खुशकी से बेजान हो गई 90 : कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज़ियादा हो कभी कहीं । मुखलिफ़ तौर पर हस्वे इक़तज़ाए हिकमत । एक हदीस में है कि आस्मान से रोज़ो शब की तमाम साअतों में बारिश होती रहती है **اللّٰه** तआला उसे जिस खित्ते की जानिब चाहता है फेरता है और जिस ज़मीन को चाहता है सैराब करता है । 91 : और **اللّٰه** तआला की कुदरत व ने'मत में गौर करें 92 : और आप पर से इन्ज़ार (डराने) का बार कम कर देते, लेकिन हम ने तमाम बस्तियों के इन्ज़ार का बार आप ही पर रखा ताकि आप तमाम जहान के रसूल हो कर कुल रसूलों की फज़ीलतों के जामेअ हों और नुबुव्वत आप पर ख़तम हो कि आप के बा'द फिर कोई नबी न हो 93 : कि न मीठा खारी हो न खारी मीठा, न कोई किसी के जाएके को बदल सके जैसे कि दिक्का दरियाए शोर में मीलों तक चला

بَشْرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ٥٦ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ٥٧ وَيَعْبُدُونَ مِن

आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुकर्र की<sup>95</sup> और तुम्हारा रब कुदरत वाला है<sup>96</sup> और **اللَّهُ** के सिवा ऐसे

دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ٥٨ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ٥٩

को पूजते हैं<sup>97</sup> जो उन का भला बुरा कुछ न करें और काफिर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है<sup>98</sup>

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ٥٩ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ

और हम ने तुम्हें न भेजा मगर<sup>99</sup> खुशी और<sup>100</sup> डर सुनाता तुम फ़रमाओ मैं इस<sup>101</sup> पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता

إِلَّا مَن شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ٥٩ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْحَيِّ الَّذِي

मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले<sup>102</sup> और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो

لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ٥٩ وَكَفَىٰ بِهِ بَدُنُوبِ عِبَادِهِ خَيْرًا ٥٨

कभी न मरेगा<sup>103</sup> और उसे सराहते हुए उस की पाकी बोलो<sup>104</sup> और वोही काफी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार<sup>105</sup>

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ

जिस ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है छ<sup>6</sup> दिन में बनाए<sup>106</sup> फिर

اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ٥٩ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ بِهِ خَيْرًا ٥٩ وَإِذَا قِيلَ لَهُم

अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक है<sup>107</sup> वोह बड़ी मेहर (रहमत) वाला तो किसी जानने वाले से उस की ता'रीफ़ पूछ<sup>108</sup> और जब उन से कहा जाए<sup>109</sup>

اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ

रहमान को सज्दा करो कहते हैं रहमान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो<sup>110</sup> और इस हुक्म ने उन्हें और बिदक्ना

जाता है और उस के जाएके में कोई तग़य्युर नहीं आता, अज़ब शाने इलाही है। 94 : या'नी नुत्फ़े से 95 : कि नस्ल चले 96 : कि उस ने एक

नुत्फ़े से दो किस्म के इन्सान पैदा किये मुज़क्कर और मुअन्नस, फिर भी काफ़िरो का येह हाल है कि उस पर ईमान नहीं लाते। 97 : या'नी

बुतों को 98 : क्यूं कि बुत परस्ती करना शैतान को मदद देना है 99 : ईमान व ताअत पर जन्नत की 100 : कुफ़्रो मा'सियत पर अज़ाबे जहन्नम

का 101 : तब्लीग़ व इर्शाद 102 : और उस का कुर्ब और उस की रिज़ा हासिल करे, मुराद येह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और

उन का ताअते इलाही में मशगूल होना ही मेरा अज़्र है क्यूं कि **اللَّهُ** तबारक व तआला मुझे इस पर जज़ा अता फ़रमाएगा, इस लिये कि

सुलहाए उम्मत के ईमान और उन की नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उन के अम्बिया को जिन की हिदायत से वोह इस रुत्बे

पर पहुंचे। 103 : उसी पर भरोसा करना चाहिये क्यूं कि मरने वाले पर भरोसा करना अ़ाक़िल की शान नहीं। 104 : उस की तस्बीह व तहमीद

करो, उस की ताअत और शुक्र बजा लाओ। 105 : न उस से किसी का गुनाह छुपे न कोई उस की गिरिफ़्त से अपने को बचा सके। 106 : या'नी

इतनी मिक्दार में क्यूं कि लैलो नहार और आपताब तो थे ही नहीं और इतनी मिक्दार में पैदा करना अपनी मख़्तूक को आहिस्तगी और

इत्मीनान की ता'लीम के लिये है, वरना वोह एक लम्हे में सब कुछ पैदा कर देने पर कादिर है। 107 : सलफ़ का मज़हब येह है कि इस्तिवा

और इस के अम्साल जो वारिद हुए हम उस पर ईमान रखते हैं और इस की कैफ़ियत के दरपै नहीं होते, इस को **اللَّهُ** जाने। बा'ज़

मुफ़स्सिरन इस्तिवा को बुलन्दी और बरतरी के मा'ना में लेते हैं और बा'ज़ इस्तीला (ग़लबा) के मा'ना में लेकिन कौले अब्वल ही अस्लम व

अक्वा है। 108 : इस में इन्सान को ख़िताब है कि हज़रते रहमान की सिफ़त मर्दे आरिफ़ से दरयाफ़्त करे। 109 : या'नी जब सय्यिदे आलम

نُفُورًا ٢٠ تَبْرُكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَسُجَّةَ

बढ़ाया<sup>111</sup> बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए<sup>112</sup> और उन में चराग़ रखा<sup>113</sup> और

قَمَرًا مُنِيرًا ٢١ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ

चमक्ता चांद और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी<sup>114</sup> उस के लिये

أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ٢٢ وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيَّ

जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे और रहमान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर

الْأَرْضِ هُونَ أَوْ إِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ٢٣ وَالَّذِينَ

आहिस्ता चलते हैं<sup>115</sup> और जब जाहिल उन से बात करते हैं<sup>116</sup> तो कहते हैं बस सलाम<sup>117</sup> और वोह जो

يَسْتَوُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ٢٤ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ

रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और कियाम में<sup>118</sup> और वोह जो अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब हम से

عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ٢٥ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا

फेर दे जहन्म का अज़ाब बेशक उस का अज़ाब गले का गुल (फन्द) है<sup>119</sup> बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मुशिरकीन से फ़रमाएं कि 110 : इस से उन का मक़सद येह है कि रहमान को जानते नहीं और येह बातिल है जो उन्होंने ने बराहे इनाद कहा क्यूं कि लुगते अरब जानने वाला ख़ूब जानता है कि रहमान के मा'ना निहायत रहम वाला हैं और येह **الله** तआला ही की सिफ़त है । 111 : या'नी सज्दे का हुक़म उन के लिये और ज़ियादा ईमान से दूरी का बाइस हुवा । 112 : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सब्आ सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं, जिन की ता'दाद बारह 12 है : हम्ल<sup>1</sup>, सौर<sup>2</sup>, जौज़<sup>3</sup>, सरतान<sup>4</sup>, असद<sup>5</sup>, सुम्बुला<sup>6</sup>, मीज़ान<sup>7</sup>, अक़ब<sup>8</sup>, कौस<sup>9</sup>, जदय<sup>10</sup>, दल्ब<sup>11</sup>, हूत<sup>12</sup> । 113 : चराग़ से यहाँ आफ़ताब मुराद है । 114 : कि उन में एक के बा'द दूसरा आता है और उस का काइम मक़ाम होता है कि जिस का अमल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे ऐसा ही फ़रमाया हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने और रात और दिन का एक दूसरे के बा'द आना और काइम मक़ाम होना **الله** तआला की कुदरत व हिक़मत की दलील है । 115 : इत्मीनान व वकार के साथ मुतवाज़ेअना शान से, न कि मुतकब्बिराना त्रीके पर जूते खट खटाते पाउं जोर से मारते इतराते कि येह मुतकब्बरीन की शान है और शरअ ने इस को मन्अ फ़रमाया । 116 : और कोई ना गवार कलिमा या बेहूदा या ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब बात कहते हैं 117 : येह सलामे मुतारकत है या'नी जाहिलों के साथ मुजादला करने से ए'राज़ करते हैं या येह मा'ना हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरुस्त हो और उस में ईज़ा और गुनाह से सालिम रहें । हसन बसरी ने फ़रमाया कि येह तो उन बन्दों के दिन का हाल है और उन की रात का बयान आगे आता है । मुराद येह है कि उन की मजलिसी ज़िन्दगी और खल्क के साथ मुआमला ऐसा पाकीज़ा है और उन की खल्वत की ज़िन्दगानी और हक़ के साथ राबिता येह है जो आगे बयान फ़रमाया जाता है । 118 : या'नी नमाज़ और इबादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़रते हैं और **الله** तबारक व तआला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी शब बेदारी का सवाब अता फ़रमाता है । हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने फ़रमाया कि जिस किसी ने बा'दे इशा दो रकअत या ज़ियादा नफ़ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है । मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते उस्माने गुनी **رضي الله تعالى عنه** से मरवी है जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअत अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का सवाब पाया और जिस ने फ़ज़्र भी बा जमाअत अदा की वोह तमाम शब के इबादत करने वाले की मिस्ल है । 119 : या'नी लाज़िम, जुदा न होने वाला । इस आयत में उन बन्दों की शब बेदारी और इबादत का ज़िक़्र फ़रमाने के बा'द उन की इस दुआ का बयान किया, इस से येह इज़हार मक़सूद है कि वोह बा वुजूद कस्रते इबादत के **الله** तआला का ख़ौफ़ रखते हैं और उस के हज़ूर तज़र्रअ करते हैं ।

وَمُقَامًا ٦٦ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ

जगह है और वोह कि जब खर्च करते हैं न हद से बढ़ें और न तंगी करें<sup>120</sup> और इन दोनों के बीच

ذَلِكَ قَوْمًا ٦٧ وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ

ए'तिदाल पर रहें<sup>121</sup> और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते<sup>122</sup> और उस जान को

النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ٦٨ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ

जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी<sup>123</sup> नाहक नहीं मारते और बदकारी नहीं करते<sup>124</sup> और जो येह काम करे

يَلْقَ أَثَامًا ٦٩ يُضَعَّفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ

वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अज़ाब क़ियामत के दिन<sup>125</sup> और हमेशा उस में ज़िल्लत से

مُهَانًا ٧٠ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ

रहेगा मगर जो तौबा करे<sup>126</sup> और ईमान लाए<sup>127</sup> और अच्छा काम करे<sup>128</sup> तो ऐसों की बुराइयों को

اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ٧١ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ٧٢ وَمَنْ تَابَ وَ

**अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा<sup>129</sup> और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और

عَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ٧٣ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ

अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की तरफ़ रुजूअ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं

**120** : इसराफ़ मा'सियत में खर्च करने को कहते हैं। एक बुजुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं। दूसरे बुजुर्ग ने कहा : नेकी में इसराफ़

ही नहीं। और तंगी करना येह है कि **अल्लाह** तआला के मुकर्रर किये हुए हुक्क के अदा करने में कमी करे, येही हज़रते इब्ने अब्बास

ने फ़रमाया। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जिस ने किसी हक़ को मन्ज़ू किया उस ने

इक्तार किया या'नी तंगी की और जिस ने नाहक में खर्च किया उस ने इसराफ़ किया। यहां उन बन्दों के खर्च करने का हाल ज़िक्र फ़रमाया

जाता है कि वोह इसराफ़ व इक्तार के दोनों मज़मूम तरीकों से बचते हैं। **121** : अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

ने फ़रमाया कि **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से अपनी बेटी बियाहते वक़्त खर्च का हाल दरयाफ़्त किया तो हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि

नेकी दो बदियों के दरमियान है। इस से मुराद येह थी कि खर्च में ए'तिदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक्तार के दरमियान है जो दोनों बदियां

हैं, इस से अब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह इस आयत के मज़मूम की तरफ़ इशारा करते हैं। मुफ़रिसरीन का कौल है कि इस आयत

में जिन हज़रात का ज़िक्र है वोह सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के अस्थाबे किबार हैं जो न लज़ज़त व तनअज़ुम के लिये खाते, न ख़ुब सूरती

और ज़ीनत के लिये पहनते, भूक रोकना सत्र छुपाना सरदी गरमी की तक्लीफ़ से बचना इतना उन का मक्सद था। **122** : शिर्क से बरी और

बेज़ार हैं। **123** : और उस का खून मुबाह न किया जैसे कि मोमिन व मुआहिद उस को **124** : सालिहीन से इन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में

कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जो इन बदियों में गिरफ़्तार थे। **125** : या'नी वोह शिर्क के अज़ाब में भी गिरफ़्तार होगा और इन मअ़ापी को अज़ाब

उस अज़ाब पर और ज़ियादा किया जाएगा। **126** : शिर्क व कबाइर से **127** : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर **128** : या'नी बा'दे तौबा

नेकी इख़्तियार करे **129** : या'नी बदी करने के बा'द नेकी की तौफ़ीक़ दे कर या येह मा'ना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उन की जगह

ईमान व ताअत वगैरा नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (मारक) मुस्लिम की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख्स हाज़िर किया जाएगा मलाएका

ब हुक्मे इलाही उस के सगीरा गुनाह एक एक कर के उस को याद दिलाते जाएंगे वोह इक्कार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश

होने से डरता होगा। इस के बा'द कहा जाएगा कि हर एक बदी के इवज़ तज़़ को नेकी दी गई। येह बयान फ़रमाते हुए सय्यिदे आलम

الرُّؤَسَا ۙ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغَوْمِ ۙ وَاكْرَامًا ﴿٤٢﴾ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ

देते<sup>130</sup> और जब बेहूदा पर गुजरते हैं अपनी इज्जत संभाले गुजर जाते हैं<sup>131</sup> और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صَبًا وَعُقْبَانًا ﴿٤٣﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर<sup>132</sup> बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते<sup>133</sup> और वोह जो अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قَرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक<sup>134</sup> और हमें परहेज गारों का

إِمَامًا ﴿٤٤﴾ أُولَئِكَ يُجْرُونَ الْعُرْفَةَ بِصَابِرٍ وَوَالِقُونَ فِيهَا تَحِيَّةً

पेशवा बना<sup>135</sup> उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाखाना इन्आम मिलेगा बदला उन के सन्न का और वहां मुजरे (दुआ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेशवाई

وَسَلَابًا ﴿٤٥﴾ خَلِيدِينَ فِيهَا حَسَنَتْ مُسْتَقْرَأً وَمُقَامًا ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا يَعْجُبُكُمْ

होगी<sup>136</sup> हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फरमाओ<sup>137</sup> तुम्हारी कुछ कद्र नहीं

رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٤٧﴾

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया<sup>138</sup> तो अब होगा वोह अज़ाब कि लिपट रहेगा<sup>139</sup>

﴿ آيَاتُهَا ٢٢ ﴾ ﴿ سُورَةُ الشُّعْرَاءِ مَكِّيَّةٌ ٢٤ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ١١ ﴾

सूरए शुअराअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَللّٰهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को अल्लाह तआला की बन्दा नवाजी और उस की शाने करम पर खुशी हुई और चेहरए अक्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए । 130 : और झूटों की मजलिस से अलाहदा रहते हैं और उन के साथ मुखालतत नहीं करते 131 : और अपने आप को लहव व बातिल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजलिस से ए'राज करते हैं । 132 : ब तरीके तगाफुल (गफ़लत करते हुए) 133 : कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीहत से पन्द पजीर होते (नसीहत कबूल करते) हैं, नफ़अ उठाते हैं और उन आयतों पर फरमां बरदाराना गिरते हैं । 134 : या'नी फरहत व सुरूर । मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह मुत्तकी अता फरमा कि उन के हुस्ने अमल और उन की इताअते खुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल खुश हों । 135 : या'नी हमें ऐसा परहेज गार और ऐसा आबिद व खुदा परस्त बना कि हम परहेज गारों की पेशवाई के काबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़तदा करें । मसअला : बा'ज मुफ़स्सिरान ने फरमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेशवाई और सरदारी की रग़बत व तलब चाहिये । इन आयत में अल्लाह तआला ने अपने सालिहीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फरमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फरमाई जाती है । 136 : मलाएका तहिय्यत व तस्लीम के साथ उन की तकरीम करेंगे, या अल्लाह عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उन की तरफ़ सलाम भेजेगा । 137 : ऐ सय्यिद अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! अहले मक्का से कि 138 : मेरे रसूल और मेरी किताब को 139 : या'नी अज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम । 1 : सूरए शुअराअ मक्किय्या है सिवाए आखिर की चार आयतों के जो "وَالشُّعْرَاءُ بِتَمِيمِهِمْ" से शुरूअ होती हैं । इस सूत्र में ग्यारह 11 रूकूअ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनसी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 हर्फ़ हैं ।